Sem·3, MN-1B

निर्मला का चरित्रांकन

कथासम्राट मुंशी प्रेमचंद का लघु उपन्यास 'निर्मला' समकालीन भारतीय समाज में नारी-जीवन से जुड़ी अनेक समस्याओं का चित्रण करता है। दहेज-प्रथा एवं अनमेल विवाह की समस्या ने भारतीय नारी के जीवन को अनेक त्रासदियों से आक्रांत किया। इस उपन्यास में नारी जीवन की इन त्रासद स्थितियों को प्रेमचंद ने केन्द्रीय पात्र – निर्मला – के माध्यम से शब्द दिया है।

निर्मला बाबू ~~उदय~~ उदयभानुलाल एवं कल्याणी की पन्द्रह वर्षीय किशोरी है। बहन कृष्णा के साथ उसका जीवन एक बेफिक्र, चंचल और खिलाड़िन प्रकृति की है। सदा काम से जी चुरानेवाली निर्मला सैर-तमाशे पर जान छिड़कती है। किन्तु भुवनमोहन से सगाई के बाद उसकी प्रकृति में अकस्मात परिवर्तन होता है। चंचलता की जगह गंभीरता और लज्जाशीलता ने ली थी। पिता की आकस्मिक मृत्यु, विवाह के रिश्ते का टूट जाना तथा दहेज की बलिवेदी पर चढ़ उसका मुंशी तोताराम से अनमेल विवाह — सबने निर्मला को किशोरावस्था से सीधे प्रौढ़ावस्था में पहुँचा दिया।

मुंशी तोताराम के साथ विवाह से निर्मला एक विवेकशील और समझदार नारी के रूप में उपस्थित होती है। यौवन में प्रवेश करती निर्मला को अपने पति की प्रेमभरी बातें दिल पर चोट करती थीं। दम्पति-विज्ञान में कुशल अधेड़ उम्र के तोताराम उसे खुश रखने की हर संभव चेष्टा करते थे – अपनी सारी कमाई उसके हाथ में रखकर। पति के प्रेम-प्रदर्शन में कोई रस, उन्माद या सच्ची भावना उसे नहीं मिलती थी। अपना रूप और यौवन का आस्वादन कराने में उसे संकोच होता था क्योंकि उसे अपने पति में पिता नजर आता था। फिर भी, अपने सुख को कर्त्तव्य पर न्योछावर करती त्यागमयी निर्मला अपने पति को सुख और संतोष देने का भरपूर प्रयास करती थी। जब वकील साहब घर आते, द्वार पर खड़ी हो अपनी मुस्कान द्वारा निर्मला उनका स्वागत करती।

निर्मला के हृदय में नारीजनित मातृत्व-स्नेह की स्वाभाविक उपस्थिति है। अपने तीनों सौतेले किशोर-पुत्रों – मंसाराम, जियाराम और सियाराम के प्रति उसके मन में मातृजन्य स्नेह का भाव है। बच्चों के साथ हँसते-खेलते वह अपना दुख-दर्द भूल जाती थी किन्तु बच्चों की विधवा बुआ उन्हें निर्मला के पास जाने से रोकती थी।

उनके मन में विमाता के प्रति शत्रुता का भर गया है। किन्तु निर्मला का हृदय वात्सल्य से भरा था। वह कहती है - "ईश्वर जानते होंगे कि मैं बच्चों से कितना प्यार करती हूँ। आखिर मेरे बच्चे ही तो हैं।" वह पिता की मार से बच्चों को बचाने दौड़ पड़ती थी।

निर्मला को अपने हमउम्र बड़े सौतेले बेटे मंसाराम से हंसने-बोलने में खुशी मिलती थी। अपने पति को खुश करने की नीयत से वह मंसाराम से अंग्रेजी सीखती है। किन्तु यही पुत्रवत स्नेह वकील तोताराम के मन में शंका के बीज बो देता है। निर्मला के चरित्रहीन होने का लांछन लगाकर तोताराम बड़े पुत्र मंसाराम को छात्रालय भेज देते हैं। इस कलंक को न सह पाने के कारण वह बीमार हो अपने प्राणों की बलि दे देता है।

निर्मला के चरित्र में सहनशीलता अपार है। मंसाराम की मृत्यु के बाद घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने, मकान नीलाम होने, जियाराम द्वारा गहनों की चोरी तथा उसकी आत्महत्या, सियाराम द्वारा गृहत्याग कर साधु बनने और मुंशी तोताराम का उसकी खोज में घर से निकल जाना आदि ऐसी अनेक घटनाएँ हैं, जो एक नारी के टूटने के लिए पर्याप्त थी। किन्तु वह सब कुछ सहती है तथा किसी तरह गृहस्थी को चलाती है। अब उसके जीवन में अपनी छोटी बच्ची के सिवा और कोई सहारा नहीं था। ऐसे कठिन दिनों में वह अपनी सखी सुधा से मन की बातें कहकर अपना दिल हल्का कर लेती थी। दुख और चिंता की अधिकता में मरणासन्न होकर निर्मला अपनी पुत्री को ननद रुक्मिणी के हाथों सौंपकर दहेज और अनमेल विवाह की वेदी पर स्वयं को बलिदान कर देती है।

निर्मला के चरित्र में पातिव्रत्य और स्वाभिमान भी कूट-कूट कर भरा है। सुधा के पति डॉ॰ भुवन जब निर्मला से छेड़छाड़ करते हैं, तो उसका यह रूप सामने आता है। मंसाराम-प्रसंग में भी अपनी बहन कृष्णा से वह कहती है - "मेरे मन में पाप का लेश भी न था। अगर एक क्षण के लिए भी मैंने उसकी ओर किसी और भाव से देखा हो तो मेरी आँखें फूट जायँ।" निश्चय ही, मुंशी प्रेमचंद ने निर्मला का चरित्रांकन एक स्वाभिमानी पतिव्रता, लज्जाशील, पारिवारिक दायित्व के निर्वहण में तत्पर एक प्रेममयी भारतीय नारी के रूप में किया है, जो सामाजिक बुराइयों का शिकार हो कष्टमय जीवन जीते मृत्यु का वरण करती है।